कैम्पस कनेक्ट

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का समाचार बुलेटिन)

जून, 2026 वर्ष : 1, अंक : 11

प्रेरणा–स्रोत :
श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्रीमान योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
डॉ. अश्विनी कुमार (कुलसचिव)
श्री दीनानाथ यादव (परीक्षा नियंत्रक)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह–सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक–मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. सत्यम मिश्र

वित्त–प्रबन्धन
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश–272202
ईमेल :
campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट : www.suksn.edu.in

(सम्पादन–प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति–कथन

पाँच जून को संसार भर में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। पर्यावरण दिवस ही क्यों, अन्य बहुत से दिवस भी समय–समय पर मनाये जाते हैं। अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस भी एक ऐसा ही महत्त्वपूर्ण दिवस है जो जून माह में ही (21 जून को) आयोजित किया जाता है। योग दिवस से हम भारतवासियों का विशेष लगाव इसलिये भी है कि इसे भारत की पहल पर ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्वीकार किया। भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री माननीय श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी ने जब इसका प्रस्ताव रखा तो विश्व–भर के अधिकांश देशों का समर्थन इसे मिला और इस तरहं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एक नये दिवस को मनाये जाने की परम्परा आरम्भ हुई। ऐसे भी योग भारत की ही विद्या है। हजारों सालों से योग और आयुर्वेद पर हमारे देश में शोध होता आया है। एक–से–एक महान योगियों की परम्परा हमारे देश में सतत बनी रही है। बीच में हम इसकी ओर उदासीन से हो गये और विश्व में लोग 'योगा' के नाम पर जाने क्या–क्या सीखते रहें। अब पुनः इसको प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। यह अवसर है कि हम स्वयं भी इससे जुड़ें और इसका लाभ उठायें तथा विश्व को भी अपनी इस धरोहर एवं इसकी शक्ति से परिचित करायें।

पर्यावरण दिवस और योग दिवस– दोनों ही स्वास्थ्य से सम्बन्धित हैं। एक प्रकृति के स्वास्थ्य से सम्बन्धित है और ूसरा व्यक्ति के स्वास्थ्य से जुड़ा है। यह भी एक सामान्य बात है कि प्रकृति का स्वास्थ्य और उसके अन्तर्गत निवास करने वाले मनुष्यों का स्वास्थ्य परस्पर प्रतिगामी नहीं, सहगामी है। दोनों एक–दूसरे पर निर्भर हैं। मनुष्य एक संवेदनशील प्राणी होने के नाते इस बात को समझता भी है, इसकी चिन्ता भी करता है और इसके प्रति सचेष्ट भी होता है।

हमारे देश के द्रष्टा ऋषियों ने हमें जीवन का वह पथ प्रदान किया, जिसमें अपने स्वास्थ्य के साथ ही प्रकृति की भी बराबर चिन्ता हमारी परम्पराओं में समाहित थी। हमने प्रकृति का यथा–आवश्यक उपयोग तो किया, पर उसका दोहन हमारी परम्परा में सम्मिलित नहीं था। हमारी संस्कृति ने हममें एक ऐसा कृतज्ञ भाव भरा कि हमने भरपूर विकास किया, पर प्रकृति के विनाश की कीमत पर नहीं। आज भोगवादी संस्कृति के प्रभाव में आया विश्व उस मार्ग पर आ पहुँचा है, जहाँ आगे चलकर हमें अपने अस्तित्व पर ही संकट नजर आ रहा है। हमें दिवस मनाकर प्रकृति और पर्यावरण की चिन्ता करनी पड़ रही है। भारत में इनके लिये कोई दिवस निश्चित नहीं था। हमारे प्रतिदिन के आचार–विचार में, हमारे उत्सव–अनुष्ठानों में, संस्कारों में, परम्पराओं में ही वह भाव समाहित था। योग भी हमारी जीवन–चर्या का अंग था और प्रकृति भी हमारी कृतज्ञ–संवेदना का भाग थी। तो आइए, अपनी परम्पराओं की ओर लौटें, अपनी संस्कृति से जुड़ें तथा योग–साधना एवं पर्यावरण–संरक्षण को एक दिन का उत्सव न मानकर अपनी जीवन–चर्या का भाग बनायें ओर अपनी तथा अपनी प्यारी धरतीमाता की भी आयु बढ़ायें।

–कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा, अहिंसा, प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति–पारावार,
ज्ञान का आलोक, मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा–प्रीति, गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन, परम निर्मल, पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का, आनन्द का, आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था, तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा, महाकरुणा, शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय, ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।
(गीत–रचना : अनन्त मिश्र)

तपन लागी धरती

तपन लागी धरती आठौं याम।
आठौं याम, सुबह औ शाम,
तपन लागी धरती आठौं याम!
धरती धरी धूप ने देखो,
लू ने गगन धरा सिर देखो,
चाहत जगत् जलायो सब राम!
तपन लागी धरती आठौं याम।
सरिता और सरोवर सूखे,
जड़–चेतन सबके मन दूखे,
जग सब पीव पुकारै मेरे राम!
तपन लागी धरती आठौं याम।
मन के मीन विकल बिन पानी,
नेह के मेघ निठुर अभिमानी,
घन–मन मिलैं कौन विधि राम?
तपन लागी धरती आठौं याम।

मुक्तक

(1)

कण–कण में पृथ्वी के सदा उजाला हो।
रातें अँधियारी हों न दिन काला हो।
दुनिया में ऐसे मानव का स्वप्न रचो,
जो धरती को ही स्वर्ग बनाने वाला हो।

(2)

मैं, तुम, यह, वह की सीमाएं तोड़ दो।
सबको ले 'हम' की ताकत से जोड़ दो।
मानवता की फसल लहलहाये सुखकर,
जीवन रसधारा को ऐसा मोड़ दो।

–पराया

जनभवन में हुई सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की समीक्षा–बैठक

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल की प्रेरणा से जन भवन में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु की नैक (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद) मूल्यांकन की तैयारी के संबंध में एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता विशेष कार्याधिकारी, श्री राज्यपाल (अपर मुख्य सचिव स्तर) डॉ० सुधीर महादेव बोबडे ने की।

बैठक में विश्वविद्यालय द्वारा नैक के विभिन्न मापदण्डों एवं प्रत्येक एट्रीब्यूट के अंतर्गत मैट्रिक्सवार की गई तैयारियों का विस्तृत प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रस्तुतीकरण में विश्वविद्यालय परिसर में उपलब्ध विभिन्न शैक्षणिक, सह–शैक्षणिक एवं प्रशासनिक सुविधाओं के साथ–साथ संचालित अन्य गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया।

विशेष कार्याधिकारी, श्री राज्यपाल ने विश्वविद्यालय की नैक तैयारियों की गहन समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि प्रस्तुतीकरण में सभी आवश्यक बिंदुओं को साक्ष्य एवं प्रामाणिक दस्तावेजों सहित सुव्यवस्थित रूप में सम्मिलित किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक गतिविधि से संबंधित जियो टैग फोटोग्राफ्स उचित कैप्शन सहित प्रदर्शित किए जाएं।

उन्होंने निर्देशित किया कि विश्वविद्यालय में व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित किए जाएं तथा ऐसे पाठ्यक्रम भी, जो विशेष रूप से छात्राओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण प्रदान करते हों, उन्हें भी प्रस्तुतीकरण में शामिल किया जाए, साथ ही ऐसे पाठ्यक्रमों के प्रमाणपत्र, रोजगार सृजन एवं विद्यार्थियों को प्राप्त लाभ का विवरण भी प्रदर्शित किया जाए।

बैठक में यह भी निर्देश दिए गए कि पोटेंशियल इम्प्लॉयर, अभिभावकों एवं संबद्ध महाविद्यालयों से प्राप्त फीडबैक को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुतीकरण में सम्मिलित किया जाए। ऑनलाइन कक्षाओं से लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्या एवं उनसे संबंधित विवरण भी शामिल किए जाएं।

विशेष कार्याधिकारी, श्री राज्यपाल ने कहा कि सीनियर विद्यार्थियों द्वारा जूनियर विद्यार्थियों को अध्ययन सहयोग, प्रॉब्लम सॉल्विंग सेशन, स्लो लर्नर्स हेतु विशेष कक्षाएं एवं उनके समयबद्ध कार्यक्रम को भी नैक प्रस्तुतीकरण में शामिल किया जाए। साथ ही सेल्फ असेसमेंट, पीयर असेसमेंट एवं वोकेशनल असेसमेंट से संबंधित गतिविधियों को भी प्रदर्शित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने विश्वविद्यालय में कार्यरत काउंसलर्स एवं मेंटर्स की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु प्रभावी मेंटरिंग व्यवस्था विकसित की जाए। प्रस्तुतीकरण में छोटी–छोटी कमियों एवं त्रुटियों को दूर करने के भी निर्देश दिए गए।

बैठक में यह भी निर्देशित किया गया कि विश्वविद्यालय द्वारा नेपाल, भूटान एवं अन्य पड़ोसी देशों के शिक्षण संस्थानों के साथ खेल प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सेमिनार एवं एमओयू जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए चाहिए तथा उन्हें अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों के अंतर्गत प्रस्तुतीकरण में सम्मिलित किया जाए।

उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सामाजिक गतिविधियों की एक्टिविटी–वाइज रिपोर्ट, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रिपोर्ट, उच्च शिक्षा में प्रवेश प्राप्त विद्यार्थियों का विवरण तथा पुरा छात्र–संबंधी जानकारी को भी प्रस्तुतीकरण में समाहित करने के निर्देश दिए।

डॉ० सुधीर महादेव बोबडे ने विश्वविद्यालय परिसर में मियावाकी वन विकसित करने पर बल देते हुए कहा कि जन भवन में राज्यपाल जी की प्रेरणा से स्थापित मियावाकी वन अत्यंत तीव्र गति से विकसित हो रहा है तथा यहां पक्षियों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में गुजरात स्थापना दिवस कार्यक्रम–श्रृंखला का 01 मई को भव्य समापन

उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति, उत्तर प्रदेश राजभवन के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय में गत कई दिनों से आयोजित गुजरात स्थापना दिवस कार्यक्रम श्रृंखला का 01 मई को भव्य समापन किया गया। गुजरात दिवस के अवसर पर इस दिन विश्वविद्यालय परिसर में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में आयोजित इस समापन कार्यक्रम में कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुजरात प्रदेश के स्थापना दिवस के आयोजन का निर्देश प्राप्त होने के उपरांत विश्वविद्यालय में लगातार विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने सभी को गुजरात दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह एक अत्यंत स्वस्थ एवं प्रेरणादायक परंपरा है, जिसमें एक राज्य का स्थापना दिवस दूसरे राज्य में उल्लासपूर्वक मनाया जाता है।

उन्होंने आगे कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की भावना को सुदृढ़ करते हैं तथा विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के बीच राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समरसता का भाव विकसित करते हैं। गुजरात की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक जीवन की जीवंतता तथा उसकी आध्यात्मिक विविधता भारत की साझा विरासत को समृद्ध करती है। वहाँ की परंपराएँ, लोकजीवन, धार्मिक सह–अस्तित्व और आध्यात्मिक चेतना देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करते हैं। गुजरात की आर्थिक प्रगति और विकास मॉडल आज भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित है।

कुलपति ने सरदार वल्लभभाई पटेल को भारत के शिल्पकार के रूप में स्मरण करते हुए कहा कि उनका योगदान राष्ट्र–निर्माण में अद्वितीय है। साथ ही महात्मा गांधी, जिनका संबंध गुजरात से रहा है, उन्होंने न केवल भारत को, बल्कि संपूर्ण विश्व को अहिंसा का संदेश दिया। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गांधीजी का यह संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। उन्होंने यह भी कहा कि महात्मा गौतम बुद्ध के नाम पर स्थापित इस विश्वविद्यालय में शांति, करुणा और सह–अस्तित्व का संदेश विद्यार्थियों को निरंतर प्रेरित करता रहेगा।

कुलपति ने अपने उद्बोधन में आगे कहा कि गुजरात दिवस केवल एक राज्य के स्थापना दिवस का उत्सव नहीं है, बल्कि यह भारत की संघीय संरचना, सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रीय एकता के जीवंत स्वरूप का प्रतीक है। इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों को देश के विभिन्न राज्यों की परंपराओं, भाषाओं, लोकजीवन और

विकास—यात्रा को समझने का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की अवधारणा तभी साकार होगी जब हम एक—दूसरे की सांस्कृतिक विशेषताओं को जानें, समझें और उनका सम्मान करें। गुजरात दिवस जैसे आयोजन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करते हैं, जो राष्ट्र की एकात्म चेतना को सुदृढ़ बनाते हैं।

इस अवसर पर कुलसचिव ने कहा कि विगत दिनों से चल रही इस कार्यक्रम श्रृंखला के समापन अवसर पर अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है। परीक्षा के व्यस्त समय के बावजूद विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सराहनीय है तथा शिक्षकों एवं कर्मचारियों का सहयोग कार्यक्रम की सफलता में महत्त्वपूर्ण रहा है।

कार्यक्रम की संयोजक एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों को देश की विविध सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराते हैं और उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना को और अधिक सुदृढ़ बनाते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में "बुद्धं शरणं गच्छामि" गीत की मनमोहक प्रस्तुति संगीतकार साकेत एवं उनकी टीम द्वारा दी गई। इसके साथ ही विद्यार्थियों द्वारा एकल एवं समूह नृत्य प्रस्तुत किए गए, जिनमें विशेष रूप से पारंपरिक गुजराती गरबा नृत्य ने सभी का मन मोह लिया। महात्मा गांधी के प्रिय भजन "वैष्णव जन तो तेने कहिए" का भावपूर्ण गायन भी किया गया। इसके अतिरिक्त गुजरात की संस्कृति, सामाजिक जीवन एवं आर्थिक विकास पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन किया गया, जिसे विद्यार्थियों ने अत्यंत रुचि के साथ देखा।

कार्यक्रम में प्रो. प्रकृति राय, प्रो. सुनील श्रीवास्तव, प्रो. लक्ष्मण सिंह, सहयुक्त आचार्य डॉ. आशुतोष वर्मा, डॉ. यशवंत यादव, डॉ. रक्षा डॉ. विमल वर्मा, अमरजीत यादव, डॉ. प्रदीप पांडेय, डॉ. अमरजीत, डॉ. दीप्ति गिरी, डॉ. किरण, डॉ. आभा द्विवेदी, डॉ. राजेश सिंह सहित अनेक शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन वाणिज्य विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शिवम शुक्ला द्वारा किया गया। विद्यार्थियों की प्रस्तुतियाँ अत्यंत उत्साहवर्धक एवं सराहनीय रहीं।

बुद्ध पूर्णिमा पर वैश्विक शांति हेतु कैंडल मार्च का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर "वैश्विक शांति और महात्मा गौतम बुद्ध का संदेश" विषयक कार्यक्रम अत्यंत उत्साह एवं भव्यता के साथ आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय, जो महात्मा गौतम बुद्ध के नाम पर तथा उनकी क्रीड़ास्थली कपिलवस्तु में अवस्थित है, में इस दृष्टि से यह पर्व विशेष महत्व रखता है। इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह के निर्देशन में प्रशासनिक भवन से नवनिर्मित द्वार एवं बुद्ध प्रतिमा तक विश्व शांति के लिए कैंडल मार्च निकाला गया। शिक्षकों एवं छात्र—छात्राओं ने "भगवान बुद्ध की करुणा हो, विश्व में शांति हो" के उद्घोष के साथ शांति का संदेश दिया।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने अपने उद्बोधन में कहा कि तथागत बुद्ध विश्व की अमूल्य धरोहर हैं, जिनकी शिक्षाएं आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जब अनेक देशों में

युद्ध और अशांति का वातावरण है, बुद्ध का सम्यक् मार्ग ही स्थायी शांति का आधार बन सकता है। उन्होंने धम्मपद के यमक वग्ग का उद्धरण देते हुए कहा—

"नहि वैरेन वैरानि सम्मन्तीध कदाचन,
अवैरेण च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो।"

अर्थात् बैर से बैर कभी शांत नहीं होता, अपितु प्रेम और अहिंसा से ही शांति स्थापित होती है।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं कला संकाय प्रो. नीता यादव ने कहा कि भगवान बुद्ध भारतीय परंपरा के अग्रदूत हैं, जिनकी शिक्षाएं समस्त मानवता के लिए आज भी समान रूप से उपयोगी हैं। अधिष्ठाता विज्ञान संकाय प्रो. प्रकृति राय ने बुद्ध के दर्शन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित बताते हुए उन्हें युगद्रष्टा कहा। कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार ने बुद्ध की शिक्षाओं को जीवन में आत्मसात करने पर बल दिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. बाल गंगाधर ने कहा कि तथागत बुद्ध विश्व संस्कृति और मानव सभ्यता के शीर्ष महापुरुष हैं।

सह–संयोजक डॉ. दीपक जायसवाल के नेतृत्व में कैंडल मार्च सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम सचिव डॉ. धर्मेंद्र कुमार एवं सह–सचिव डॉ. आजाद कुमार ने आयोजन की व्यवस्थाएं सुव्यवस्थित ढँग से संपन्न कराईं।

कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रों द्वारा धम्मचक्र की आकर्षक रंगोली का निर्माण एवं दीपदान किया गया, जिससे आलोकित होकर वातावरण आध्यात्मिक हो उठा। सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी आकर्षण का केंद्र रहीं। इस अवसर पर प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे, प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव, प्रो. जितेन्द्र कुमार सिंह, प्रो. लक्ष्मण सिंह, डॉ. मुन्नू खान, डॉ. जयसिंह यादव सहित विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।

एनसीसी द्वारा ऑपरेशन सिंदूर की सफलता की पहली वर्षगांठ मनाई गई

दिनांक 09.05.2026 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की एनसीसी इकाई द्वारा भारतीय सेना द्वारा किए गए ऑपरेशन सिंदूर की सफलता की पहली वर्षगांठ मनाई गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कला संकाय के पूर्व अधिष्ठाता प्रो. हरीशकमार शर्मा ने भारत सरकार व भारतीय सेना को इस अभियान की सफलता के लिए बधाई दी तथा आतंकियों द्वारा इसमें मारे गए भारतीय लोगों के प्रति व उनके परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की।

इस कार्यक्रम में उपस्थित हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे ने इस अभियान को न केवल भारत सरकार की सफलता बताया, बल्कि कहा कि भारतीय सेना ने बहुत ही तत्परता से ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया दिया, जिसमें बहुत से आतंकी मारे गए और उनके ठिकाने नष्ट हुए। इस कार्यक्रम में भूगोल विभाग के अध्यक्ष डॉ. विशाल गुप्ता ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता की पहली वर्षगांठ मनाए जाने पर भारत सरकार और भारतीय सेना को बधाई देते हुए इसमें शहीद हुए लोगों को याद किया। कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ. प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी ने ऑपरेशन सिंदूर के समय हुई आतंकी घटना के बारे में बताते हुए भारतीय सेना द्वारा चलाये गए शौर्यमय अभियान पर अपनी बात रखी।

इस कार्यक्रम में ऑपरेशन सिंदूर से संबंधित एक डॉक्युमेंट्री फिल्म भी कैडेट्स को दिखाई गई। इसके साथ ही डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल से आए जिला पीपीएम समन्वयक श्री सतीश मिश्रा ने जनपद में चल रहे 100 दिवसीय संघन टी. वी. मुक्त भारत अभियान के बारे में कैडेट्स को टी. वी. रोग के लक्षण, उपचार व बचाव के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि दो सप्ताह से अधिक खांसी आना, बुखार रहना, वजन कम होना, भूख न लगना, सीने में दर्द, थकान के साथ हल्का बुखार आना– यह लक्षण यदि दिखाई दें तो ऐसे लोग अपनी जाँच जरूर करायें।

उन्होंने एनसीसी कैडेट्स को यह भी बताया कि अगर उपर्युक्त लक्षण किसी में दिखाई दें तो उसे जाँच के लिए ले आयें, जिससे टी. वी. मुक्त भारत अभियान सफल बनाया जा सके। एनसीसी के सीनियर अंडर ऑफिसर कमलेश ने कार्यक्रम के अंत में सभी को धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट रजनीश, कुशल, खुशी, दिव्या, व अन्य उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में प्रवेश–प्रक्रिया आरम्भ

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में संचालित 41 पाठ्यक्रमों में से 38 पाठ्यक्रमों में प्रवेश की प्रक्रिया 09 मई से शुरू की गयी है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में प्रवेश के इच्छुक छात्र–छात्रा सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के ई–समर्थ प्रवेश पोर्टल के माध्यम से 14 जून तक अपना पंजीकरण कर आवेदन कर सकते है। इसके साथ ही सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिसर के विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रम –बी.एससी., बी.एससी.–गृह विज्ञान, बी.एससी.–कृषि, बी.सी.ए., एम.एससी. (गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, जीव विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान एवं गृह विज्ञान) वाणिज्य संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रम बी.बी.ए., बी.कॉम., एम.बी.ए. एवं एम.कॉम. कला संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रम–बी.ए. एवं एम.ए.– हिंदी; उर्दू; संस्कृत; अंग्रेजी; इतिहास; प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व; भूगोल; अर्थशास्त्र; राजनीति विज्ञान; मनोविज्ञान; लोक प्रशासन तथा समाजशास्त्र एवं विधि संकाय के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रम बी.ए.–एल.एल.बी. में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू हो गयी है।

इस वर्ष स्ववित्त योजना के अंतर्गत विज्ञान संकाय में दो नए पाठ्यक्रम बी.एससी.–कृषि एवं बी.सी.ए. शुरू किये गए हैं। बी.सी.ए. पाठ्यक्रम सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में आईटी पेशेवरों की बढ़ती माँग को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भ किया जा किया गया है। यह पाठ्यक्रम छात्र–छात्राओं को सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, डेटा विश्लेषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A. I.) एवं साइबर सुरक्षा, वेब डेवलपमेंट तथा आईटी सेवाओं जैसे क्षेत्रों में रोजगार के व्यापक अवसर प्रदान करेगा। बी.एससी. कृषि एक अत्यंत माँग वाला कार्यक्रम है, क्योंकि यह विज्ञान, प्रौद्योगिकी और व्यवसाय के समन्वय के माध्यम से वैश्विक खाद्य सुरक्षा, सतत कृषि तथा पर्यावरणीय परिवर्तनों जैसी चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है। गतवर्ष की भांति छात्र–छात्राओं की सहायता हेतु विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में हेल्प डेस्क स्थापित किया गया हैं। साथ ही छात्र–छात्राएं विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध ए आई चेटबॉट सुध–बुध (Sudh Budh) से प्रवेश सम्बन्धी सहायता प्राप्त कर सकते है। प्रवेश–प्रक्रिया से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए अभ्यर्थी सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट **https://www-suksn-edu-in/** पर जा सकते हैं।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' के अंतर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के शिवालय परिसर में "सोमनाथ स्वाभिमान पर्व" के उपलक्ष्य में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार द्वारा भगवान शिव एवं राष्ट्र गौरव के प्रतीक सोमनाथ मंदिर के ऐतिहासिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत रंगोली, निबंध–लेखन, पेंटिंग एवं पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन पूर्व दिवसों में किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। इसी क्रम में भजन एवं दीपोत्सव सन्ध्या का भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रो. हरीशकुमार शर्मा, प्रो. नीता यादव, साकेत मिश्रा, डॉ विशाल गुप्ता आदि ने इस अवसर पर भजन गाये। भजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति विभिन्न वाद्ययंत्रों के माध्यम से साकेत मिश्रा एवं उनकी टीम द्वारा की गई। प्रतियोगिताओं के माध्यम से सोमनाथ मंदिर के राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक चेतना तथा भारतीय स्वाभिमान से जुड़े ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित किया गया तथा विश्वविद्यालय परिसर में ओंकार जप, महाआरती, भजन आदि का आयोजन भी किया गया।

इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने अपने सन्देश में कहा कि सोमनाथ मंदिर भारत की सांस्कृतिक चेतना, आत्मगौरव और आध्यात्मिक परंपरा का जीवंत प्रतीक है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति सदैव सत्य, करुणा और सह–अस्तित्व के मूल्यों पर आधारित रही है तथा सोमनाथ मंदिर इन आदर्शों की गौरवशाली अभिव्यक्ति है। उन्होंने विद्यार्थियों से भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रेरणास्रोतों को जानने तथा उन्हें आत्मसात करने का आह्वान किया। कुलपति ने कहा कि ऐसे आयोजन युवाओं में राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक गर्व और आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति और मूल्यों के संरक्षण का भी सशक्त साधन है।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रोफेसर नीता यादव ने कहा कि सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि भारतीय आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक है। उन्होंने विद्यार्थियों से भारतीय विरासत के संरक्षण एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन में सक्रिय सहभागिता निभाने का आह्वान किया।

प्रो. हरीशकुमार शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सोमनाथ का इतिहास संघर्ष, आस्था और राष्ट्र–गौरव की प्रेरक गाथा है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं से जोड़ने का कार्य करते हैं।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रो. दीपक बाबू, प्रो. लक्ष्मण सिंह, डॉ. शरदेंदु त्रिपाठी सहित अनेक शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता रही।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 'सोमनाथ स्वाभिमान–पर्व' के अंतर्गत दीपोत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर सोमवार सायंकाल विश्वविद्यालय परिसर स्थित महादेव मंदिर के समक्ष भव्य दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दीपों की आलोकमयी छटा एवं भक्तिमय वातावरण के बीच विश्वविद्यालय परिवार ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परंपराओं के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की।

कार्यक्रम में कुलपति प्रोफेसर कविता शाह, अधिष्ठाता कला संकाय प्रोफेसर नीता यादव, हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सत्येंद्र कुमार दुबे, लोक प्रशासन विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सुनीता त्रिपाठी, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. आभा द्विवेदी, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. रक्षा, डॉ. रेनू, डॉ. मनीष बाजपेयी, डॉ. विनीता रावत, डॉ. किरण गुप्ता, डॉ. मयंक कुशवाहा, डॉ. अमित साहनी डॉ दीप्ति गिरी सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने दीप प्रज्वलित कर सहभागिता की।

इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति में दीपोत्सव केवल प्रकाश का उत्सव नहीं, बल्कि मानव जीवन में सकारात्मकता, रचनात्मकता और आत्मिक चेतना के जागरण का प्रतीक है। दीपक अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान, समरसता और सद्भाव का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि दीपोत्सव समाज में आनंद, उत्साह एवं एकता का वातावरण निर्मित करता है तथा युवाओं को भारतीय संस्कृति के मूल्यों से जोड़ने का कार्य करता है।

कुलपति ने कहा कि सोमनाथ मंदिर भारत की सांस्कृतिक धरोहर, राष्ट्रीय चेतना और आत्मगौरव का प्रतीक है। स्वतंत्र भारत में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण राष्ट्र की सांस्कृतिक पुनर्स्थापना और आत्मविश्वास का ऐतिहासिक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर युवाओं की जिम्मेदारी है कि वे भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभाएं।

कार्यक्रम में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा अनेक भजन, आध्यात्मिक गीत एवं संवाद प्रस्तुत किए गए, जिन्होंने वातावरण को भक्तिमय एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत–प्रोत कर दिया। सामूहिक दीप प्रज्वलन एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित जनसमूह को भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपराओं से जोड़ने का कार्य किया। कार्यक्रम के अंत में मंगल आरती एवं शांति पाठ के साथ आयोजन संपन्न हुआ। उक्त जानकारी जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अविनाश प्रताप सिंह द्वारा प्रदान की गई।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 'कुलपति–शिक्षक संवाद' का आयोजन

कुलपति ने शिक्षकों को बताया शिक्षा–व्यवस्था की रीढ़

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) के तत्वावधान में "कुलपति शिक्षण संवाद" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विश्वविद्यालय में शैक्षणिक वातावरण को और अधिक सुदृढ़ बनाना, शिक्षकों के साथ संवाद स्थापित करना तथा शिक्षण, शोध एवं छात्रहित से जुड़े विषयों पर विचार–विमर्श करना रहा।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने शिक्षकों के साथ विस्तृत संवाद करते हुए कहा कि किसी भी शिक्षण संस्था की वास्तविक शक्ति उसके निष्ठावान, कर्मठ एवं कौशलयुक्त शिक्षक होते हैं। शिक्षक केवल शिक्षण संस्थानों के विकास तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे समाज के बौद्धिक एवं नैतिक रक्तसंचार का कार्य करते हैं। प्राचीन भारत से लेकर वर्तमान समय तक राष्ट्र–निर्माण एवं समाज को दिशा देने में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

कुलपति ने कहा कि एक शिक्षक का केवल अपने विषय का ज्ञाता होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे निरंतर नए शोध, अनुसंधान, नवाचार एवं वैश्विक शैक्षणिक परिवर्तनों से स्वयं को अद्यतन रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने का कार्य ही वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षक का उत्साह, ऊर्जा, समर्पण एवं लगन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रो. कविता शाह ने कहा कि "कुलपति शिक्षक संवाद" विश्वविद्यालय का एक महत्वपूर्ण एवं रचनात्मक कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से शिक्षकों के विचार, सुझाव एवं समस्याओं को सीधे सुनकर उनका समाधान सुनिश्चित किया जा सकता है। उन्होंने पहले महिला शिक्षकों एवं उसके उपरांत पुरुष शिक्षकों के साथ अलग–अलग संवाद स्थापित किया तथा सभी की बातों को गंभीरता एवं संवेदनशीलता के साथ सुना।

संवाद के दौरान शिक्षकों द्वारा विश्वविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों को और प्रभावी बनाने, शोध एवं नवाचार को बढ़ावा देने, खेल गतिविधियों को विस्तार देने तथा अध्ययन केंद्रों से संबंधित पाठ्यक्रमों के संचालन पर अपने विचार रखे गए। साथ ही परिसर में विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की सुविधाओं को बेहतर बनाने, स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण को और सुदृढ़ करने तथा दूर–दराज से आने वाले विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

विशेष रूप से विश्वविद्यालय में बस सुविधा बढ़ाने एवं विद्यार्थियों को साइकिल से आने के लिए प्रेरित करने जैसे विषयों पर भी सकारात्मक चर्चा हुई। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन छात्रहित को सर्वोपरि मानते हुए एक स्वस्थ, सुरक्षित एवं प्रेरणादायी शैक्षणिक वातावरण विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय केवल परीक्षा एवं पाठ्यक्रम संचालन का केंद्र नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण, शोध, नवाचार, खेल एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का भी महत्वपूर्ण मंच है। विश्वविद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं अनुसंधान की संस्कृति विकसित करने के लिए सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों का सामूहिक सहयोग आवश्यक है।

कार्यक्रम में आईक्यूएसी निदेशक प्रो. सौरभ ने विषय प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

एनसीसी की ओर से 'नशा–मुक्ति–अभियान' पर ऑनलाइन संगोष्ठी

टी टोबैको डे के अवसर पर 'नशा मुक्ति अभियान' विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। एनसीसी के द्वितीय वर्ष के कैडेट रजनीश ने सभी का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के चिकित्सक डॉ अरुण द्विवेदी ने कैडेट्स को तंबाकू के सेवन से होने वाली बीमारियों से अवगत कराया एवं ये भी बताया कि ये बीमारियां कितनी जानलेवा हो सकती है।

इस अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के एनसीसी के ए. एन. ओ. डॉ. (ले.) प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी ने तंबाकू के सेवन एवं भारत सरकार के नशा मुक्ति अभियान के बारे में कैडेट्स को अवगत करवाया। इन्होंने बताया कि किस प्रकार बहुत से परिवार गंभीर बीमारियों के कारण सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहे है। इस अवसर पर एनसीसी अधिकारी ने कैडेट्स को सभी को जागरूक करने व नशे की लत में फंसे लोगों को नशा छुड़ाने के लिए सार्थक प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में प्रथम वर्ष के कैडेट कुशल त्रिपाठी ने सभी का धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम में कैडेट दिव्या, खुशी, रीना, सपना, सुकृति, अभिषेक व अन्य उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

एक लोककथा है कि एक पण्डुकी और भैंस में मित्रता थी। एक बार दोनों कहीं जा रही थीं। रास्ते में पण्डुकी को टट्टी लगी। उसने भैंस से कहा– 'बहिनी, बहिनी, मुझे तो टट्टी लगी है।' भैंस ने कहा– 'हग ले मेरी पीठ पे।' पण्डुकी ने भैस की पीठ पर हग दिया। थोड़े आगे जाने पर अब भैंस को टट्टी लगी। भैंस ने भी पण्डुकी से वही कहा– 'बहिनी, बहिनी, मुझे टट्टी लगी है।' इस पर पण्डुकी ने भी भैंस की ही तरह कह दिया– 'हग ले मेरी पीठ पर।' भैंस ने हग भी दिया। अब कहाँ भैस का किया हुआ ढेर सारा गोबर और कहाँ जरा सी पण्डुकी! भैंस के गोबर में वह पूरी तरह से दब गयी। कथा तो इसके आगे भी है जो दोनों की अटूट दोस्ती और सुख–दुख में एक–दूसरे का साथ निभाने का सन्देश देती है कि भैंस स्वयं तो कुछ नहीं कर पायी, पर वहीं बैठी पण्डुकी की रखवाली करती रही। फिर एक सियार आया और गोबर में दबी उस पण्डुकी की गन्ध पाकर उसे सूँघने लगा। इस पर भैंस ने कहा– 'सूँघत–साँघत का हौ, हटाय के न देखौ।' सियार ने गोबर हटाया तो उसे पण्डुकी दिखी। वह फिर उसे जिज्ञासावश उलट–पलटकर देखने लगा। भैंस फिर बोली– 'उलटत–पलटत का हौ, धोय के न देखौ। सियार ने पण्डुकी को धोया। फिर जब उसे खाने के बारे में सोच ही रहा था, कि भैंस ने कहा– 'सोचत–साचत का हौ, सुखाय के न देखौ।' सियार ने उसे थोड़ी देर के लिये धूप में सूखने को रख दिया। पण्डुकी मरणासन्न सी चुपचाप पड़ी रही और जैसे ही उसके पंख कुछ सूखे, अवसर पाकर वह तुरन्त उड़कर सियार की पहुँच से दूर चली गयी। इस तरह उसकी जान बची और सियार हाथ मलता रह गया।

यों तो यह एक मनोरंजक कथा है, बच्चों को हँसाने और उन्हें मित्रता का पाठ पढ़ाने के लिये सुनायी जाती है। पर, वास्तव में इसका एक और भी अभिप्राय है और वह पर्यावरण से जुड़ता है। जहाँ–तहाँ कूड़ा–कचरा फेंक देना और गन्दगी फैलाना आज की हमारी बड़ी समस्या है, जिससे पर्यावरण तो प्रदूषित होता ही है, बहुत सी समस्याएँ भी जन्म लेती हैं। जरा सी ही बरसात में शहरों में जलभराव हो जाना इसका ही एक आयाम है कि हमारे द्वारा फैलाया जा रहा कचरा नालियों में फँसकर उनके प्रवाह को अवरुद्ध कर देता है और यह समस्या उत्पन्न होती है। पर यह कथा हमें सिखाती है और इसके लिये प्रेरित करती है कि जब पशु–पक्षी तक पर्यावरण के प्रति इतने सजग हो सकते हैं तो फिर हम मनुष्य क्यों नहीं? उन्हें तो कोई सिखाने–बताने वाला भी नहीं है, जबकि हमारे लिये कितने ही पाठ, कितनी ही अच्छी बातों को बताने–सिखाने के लिये निरन्तर पढ़ाये जाते हैं; फिर भी हम नहीं सुधरते।

भैंस सजग है कि धरती पर यत्र–तत्र–सर्वत्र गन्दगी नहीं होने देनी है। इसलिये वह उचित स्थान पर निस्तारण हेतु पण्डुकी से अपनी पीठ पर बीट कराती है और यह नहीं सोचती कि जरा सी ही तो इसकी बीट है, इससे क्या बिगड़ जायेगा? कर लेने देते हैं इसे कहीं पर। लेकिन नहीं। भैंस तो चलो सक्षम है, पर उससे भी बड़ी बात है पण्डुकी के निर्णय की। भैंस के ढेर सारे गोबर को सँभाल सकने की सामर्थ्य उसमें नहीं है, परन्तु फिर भी यह ललक है कि मार्ग को गन्दा नहीं होने देना है। उसका अस्तित्व संकट में पड़ जाता है, पर वह पर्यावरण को संकट में नहीं पड़ने देना चाहती। एक तरह से वह तो अपना बलिदान इसके लिये दे ही देती है; वह तो कहिए कुछ भाग्य और कुछ भैंस की चतुराई, कि बच जाती है।

कहने का अभिप्राय यह है कि पाँच जून को हम प्रतिवर्ष पर्यावरण दिवस मनाते हैं,। हम क्या, पूरी दुनिया मनाती है। पर हमारे लिये पर्यावरण के बारे में सोचना और कुछ रस्म–अदायगी करना एक दिवस भर का काम नहीं है। हमारी परम्परा में तो हम हर रोज पर्यावरण दिवस मनाते हैं। हमारी संस्कृति में, धर्म में, परम्परा में, जीवन–शैली में वे तत्त्व समाहित हैं जो हमें पर्यावरण के संरक्षण से जोड़ते हैं। अनायास हमसे उनकी हित–चिन्ता कराते हैं। हम प्रकृति–पूजक लोग हैं। हम कृतज्ञतावादी लोग हैं। हम पृथ्वी को माता मानने वाले लोग हैं। हम नदियों को भी माँ समान मानते हैं। हम अगर किसी से कुछ प्राप्त करते हैं तो बदले में यदि और कुछ न भी सही तो तो कम–से–कम कृतज्ञ–भाव तो उसे समर्पित करते ही हैं।

ऋग्वेद में लिखा है–

'शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तुपीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः।'

अर्थात् ''हे प्रभु! आप द्वारा प्रदत्त अमूल्य उपहार जल हमारे लिये अभीष्ट प्राप्ति का साधन तथा रक्षा–कवच बने। आप हम पर कल्याणकारी सुख की वर्षा करते रहें। हम व्रत लेते हैं कि आपके इस अमूल्य उपहार का अपव्यय तथा इसे प्रदूषित कर इसकी अवमानना नहीं करेंगे। हे व्रतों के स्वामी, आप हमारे इस व्रत की रक्षा करें।' (गीता स्वाध्याय, मई, 2010, पृ. 7)

प्रागज्योतिषपुर की कामाख्या यात्रा में प्यास से व्याकुल भीमसेन बिना हाथ–पाँव धोये धूल भरे पैरों के साथ ही देवी–कुण्ड में उतर जाते हैं तब ऐसी स्थिति में उस जल के दूषित हो जाने पर रिश्ते में उनका नाती बर्बरीक पितामह होते हुए भी उनसे युद्ध करने को तत्पर हो जाता है और कहता है–

'मूलं मूत्रं पुरीचं च श्लेष्मनिष्ठीवितं तथा
गंडूषमप्सु मुंचनित ये ते ब्रह्महभिः सभाः।'

बर्बरीक कहता है, जो जल में मल–मूत्र, थूक, कुल्ला तथा कूड़ा–कचरा फेंकते हैं, वे ब्रह्महत्या करने वाले व्यक्ति के समान अपराधी हैं, उन्हें दण्ड मिलना चाहिए। यह लोकविरोधी कार्य है, जीवन और जगत् दोनों के लिये हानिकारक है। (डॉ. विष्णुदत्त राठौर; शिवानन्द वाणी; जन.–मार्च, 2010)

यह वह देश है। ऐसी इसकी परम्परा है, रीति–नीति है, संस्कार हैं, मान्यताएं हैं। ऐसे देश में यदि हम हमें एक दिन के पर्यावरण दिवस पर विश्वास कर बैठना पड़े तो समझिए कि हम कहाँ पहुँचेंगे। अपनी परम्परानुसार हमारे लिये हर दिवस पर्यावरण दिवस होना चाहिए और संसार के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण बनना चाहिए कि देखिए, जीवन ऐसे जिया जाता है– जिससे अपना जीवन भी बढ़े और धरती का भी।

21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस है। दिवस हमारे संकल्प को ताजा और दृढ़ करने के लिये आते हैं कि हम नये सिरे से प्रतिबद्ध हों और समीक्षा करें कि विगत वर्ष में क्या पाया तथा आगामी वर्ष के लिये हमारा लक्ष्य क्या है। सो हम दिवस मनायें, पर मात्र एक दिन के लिये नहीं। योग को भी अपनी जीवन–चर्या का स्थायी अंग बनायें। इससे हम स्वस्थ रहेंगे ओर हम स्वस्थ रहेंगे तो राष्ट्र स्वस्थ रहेगा, सबल रहेगा। अतः जून माह में पड़ने वाले इन दोनों महत्त्वपूर्ण दिवसों के लिये सभी को बहुत बधाई और शुभकामनाएं। भारति जय विजय करे!

समत्वं योग उच्यते

–नरेन्द्र मोहन

योग की अनेक परिभाषाएँ हैं। परम ब्रह्म से मिलन को योग कहा जाता है। योग का अर्थ है, दो का जुड़ना। मान्यता यह है कि जब जीवात्मा को परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है तो उसे योग कहते हैं। एक अन्य परिभाषा के अनुसार, जब 'अहं' भाव अर्थात् अहंकार का लोप हो जाता है तब व्यक्ति योग में स्थित हो जाता है। यह भी एक परिभाषा है कि जब राग व द्वेष से चित्त मुक्त होता है तब योग अर्थात् परम मिलन संपन्न होता है। कुछ कहते हैं कि मानव को अपने वास्तविक स्वरूप की विस्मृति है। यथार्थ में समस्त नाम, रूप व कर्म ब्रह्म ही हैं; पर इस सत्य की विस्मृति है तथा जिस विधि से, जिस विद्या से यह विस्मृति टूटे, स्मृति जागे, वह विधि व विद्या ही योग है।

भारतीय मनीषा ने योग को अनेक नाम दिए हैं और योग की अनेक शाखाएँ विकसित की हैं, पर सभी का उद्देश्य है मन को वश में करने की विधि खोजना, क्योंकि इसी से वास्तविक सुख, संतोष, शांति और आनंद प्राप्त हो सकता है। कोई कर्मयोग की विधि को अपनाता है तो कोई ज्ञानयोग की तो कोई भक्तियोग अथवा हठयोग और राजयोग की। अनेक स्थानों पर भारतीय मनीषा ने अष्टांग योग की बात की है और कई मनीषी ऐसा मानते हैं कि ज्ञानयोग और सांख्ययोग एक ही हैं। अष्टांग योग में ही यम, नियम, आसन,

प्रत्याहार, प्राणायाम, धारणा, ध्यान और समाधि आते हैं। पतंजलि ने 'योगसूत्र' ग्रंथ में इनकी विस्तार से व्याख्या की है। योग के संदर्भ में जिन ग्रंथों को भारतीय संस्कृति में सर्वाधिक सम्मान प्राप्त है, उनमें से एक है 'गीता' और दूसरा है पतंजलि का 'योगसूत्र'। भारतीय मनीषा ने 'भक्ति' को भी मानव संस्कृति के विकास और योग का एक प्रमुख आधार माना है, अतः भारतीय जीवन में भक्तियोग का महत्त्व तनिक भी कम नहीं है, पर इतनी बात स्पष्ट है कि 'योग' की कोई भी विद्या हो, कोई भी शाखा हो, वह मन की प्रक्रिया से ही जुड़ी है। योग का प्रमुख विषय मन ही है। मन का कोई भी रूप हो, वह योग की परिधि में आ जाएगा। गीता के दूसरे अध्याय में योग की विशेष चर्चा है, जो कर्मयोग की आधारशिला है।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्य सिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥

—श्रीमद्भगवद्गीता, २—४८

हे धनंजय! आसक्ति को त्यागकर सिद्धि और असिद्धि में समान दृष्टि रखकर, योग में स्थित होकर तू कर्म कर। इस समान दृष्टि से समत्व भाव उत्पन्न होगा और इसे ही समत्व योग कहा जाता है।

सिद्धि और असिद्धि में समान रहने का भाव निश्चित रूप से एक अत्यधिक असाधारण मनःस्थिति है। जीवन में सभी सिद्धि अर्थात् सफलता और ऐश्वर्य चाहते हैं। असिद्धि से व्यक्ति का विचलित हो जाना, प्रभावित हो जाना अत्यंत स्वाभाविक माना जाता है। इस स्थिति के निराकरण हेतु गीता का उपदेश है कि 'कर्म' में आसक्ति न आने दो। फलाकांक्षा से राग और आसक्ति उत्पन्न होती है और यह राग ही द्वेष भी उत्पन्न करता है। मन के समस्त संकल्प—विकल्प राग और द्वेष के कारण ही तो उत्पन्न होते हैं। भगवान् महावीर ने राग और द्वेष को मन—रूपी रथ के दो पहिए माना है। अगर राग और द्वेष से बचा जा सके तो व्यक्ति योगस्थ हो सकता है और जीवन में समत्व प्रधान आचरण कर सकता है। ध्यान रहे, समत्व का अर्थ अकर्म नहीं है, और न समत्व का अर्थ है चुनाव की जो व्यवस्था उपलब्ध है उसका परित्याग। समत्व स्वयं में एक अंतर्दृष्टि है। समत्व का अर्थ है समाधि में रहते हुए कर्म करना। यह सचेतन—बोध है, यह सचेतन समता है। यह सतत जागकर बोधपूर्वक जीवन में रहने की बात है। यह साक्षीभाव की स्थिति है। न तो 'मैं' सफलता हूँ और न 'मैं' असफलता हूँ। 'मैं' सफलता और असफलता के स्पर्श से भी परे हूँ, दोनों से पृथक्, एक विशेष हूँ। सफलता और असफलता दोनों ही मेरे ऊपर से बिना मुझे प्रभावित किए निकल जाएँगी। समत्व योग से मुक्त पुरुष पाप—पुण्य व अन्य सभी द्वंद्वों से परे होता है, वह किसी भी द्वंद्व से प्रभावित नहीं होता, वह द्वन्द्वातीत होता है, समस्त द्वंद्वों का अतिक्रमण करके सदैव परम शांति और परम आनंद के स्वरूप में अपने को स्थित रखता है। ऐसे पुरुष का मन किसी भी स्थिति में चलायमान नहीं होता, वह सदैव अकेले रहता है। ऐसा व्यक्ति अस्तित्व को खंड—खंड करके नहीं देखता, उसका जीवन समन्वय का जीवंत प्रतीक बन जाता है। अस्तित्व के साथ यह समन्वय अंतस की साधना के द्वारा आता है और यह साधना ही योग है।

पतंजलि अपने ग्रंथ 'योगसूत्र' में कहते हैं कि तुम मन की प्रत्येक वृत्ति को अपने स्वयं में स्थित होकर देखो। बस तुम देखो, द्रष्टा बनो; मन का तो स्वभाव ही है चलना, मन है तो वह रुक ही नहीं सकता, वह तो निर्विचार हो हो नहीं सकता, अतः मन को जो करना है वह करने दो। जो अंतस में हो रहा है वह होने दो। तुम बस केवल जो हो रहा है उसे निहारो, बहुत ही सतर्कता से, गहराई से, बोध से उसे निहारो। तुम यह जानते हुए निहारो कि मन की जो वृत्ति है वह 'तुम' नहीं हो, तुम स्वयं इस वृत्ति से पृथक् हो, उसके 'साक्षी' हो। पतंजलि कहते हैं, व्यक्ति जीवन में साक्षीभाव प्राप्त करे, वृत्तियों का दर्शक बने, कुछ ऐसा भाव रखे कि मन की किसी भी वृत्ति से उसका कुछ भी लेना—देना नहीं है, उससे उसका कोई नाता नहीं है, वह उससे लिप्त हो ही नहीं सकता। बस देखते रहो, देखते रहो, स्वयं को असंबद्ध करते रहो। वृति को मात्र देखना है, उसके साथ इंद्रिय के स्तर पर शरीर पर कतई भी सहयोगी नहीं बनना है। बिना किसी संबद्धता के बस मात्र वृत्ति को देखते रहने से ही साक्षीभाव प्राप्त होता है और जीवन में समत्व आता है तथा साधक योगस्थ हो जाता है। भारतीय मनीषा का मानना है कि मन को चुपचाप साक्षीभाव से देखते रहने में, कुछ ही देर बाद मन शिथिल पड़ जाता है, वह फिर ठहर जाता है। जब साधक केवल देखता रहता है, बिना मन की वृत्ति के साथ कोई सहयोग करे, बिना कोई तादात्म्य बनाए, बिना कोई निर्णय किए, बिना आलोचना के, बिना प्रशंसा के बिना हानि—लाभ के, बिना जय—पराजय के, बिना सफलता असफलता की चर्चा के, तब कुछ ही काल की साधना और अभ्यास के बाद एक ऐसा क्षण आता है कि मन ठहर जाता है, शांत हो जाता है और अपनी सत्ता का स्वयं विसर्जन कर देता है। जब मन ही नहीं रहता तब जो चेतना है, वह तत्काल साक्षीभाव में रूपांतरित हो जाती है और फिर केवल साक्षी ही बचता है। तत्पश्चात् धीरे—धीरे ऐसी स्थिति आती है कि यह साक्षीभाव भी गिर जाता है। योग की भाषा में, यह वह स्थिति है जब काल भी थम जाता है। पतंजलि कहते हैं कि साक्षीभाव के अतिरिक्त और सभी दूसरी अवस्थाओं में मन छूटता नहीं है, मन का लोप नहीं होता और व्यक्ति का तादात्म्य मन के साथ बना ही रहता है।

(प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित 'भारतीय संस्कृति' पुस्तक से साभार)

सबसे प्रथम कर्तव्य शिक्षा

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सबसे प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में,
शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में।
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है।
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है।।

जब तक अविद्या का अँधेरा हम मिटावेंगे नही,
जब तक समुज्ज्वल ज्ञान का आलोक पायेंगे नही,
तब तक भटकना व्यर्थ है सुख—सिद्धि के संधान में,
पाये बिना पथ पहुँच सकता कौन इष्टस्थान में?

वे देश जो हैं आज उन्नत और सब संसार से—
चौंका रहे हैं नित्य सबको नव नवाविष्कार से।
बस ज्ञान के संचार से ही बढ़ सके हैं वे वहाँ,
विज्ञान—बल से ही गगन में चढ़ सके हैं वे वहाँ।।

विद्या मधुर सहकार करती सर्वथा कटु निम्ब को,
विद्या ग्रहण करती कलों से शब्द को, प्रतिविम्ब को!
विद्या जड़ों में भी सहज ही डालती चैतन्य है,
हीरा बनाती कोयले को, धन्य विद्या धन्य है !

विद्या दिनों का पथ पलों में पार है करवा रही,
विद्या विविध वैचित्र्य के भण्डार है भरवा रही।
गति—सिद्धि उसकी हो चुकी आकाश में, पाताल में,
है वह मरों को भी जिलाना चाहती कुछ काल में!

पाया हमीं से था कभी जो बीज वर विज्ञान का,
उसको दिया है दूसरों ने रूप रम्योद्यान का।
हम किन्तु खो बैठे उसे भी जो हमारे पास था,
हा! दूसरों की वृद्धि में ही क्या हमारा हास था!

(स्वराज प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित 'भारत भारती' से साभार)

यह धरती कितना देती है

—सुमित्रानन्दन पन्त

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोये थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी
और फूल—फलकर मै मोटा सेठ बनूँगा!
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बन्ध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला!
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गये!
मैं हताश हो बाट जोहता रहा दिनों तक
बाल—कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,

ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था!

अर्द्धशती हहराती निकल गयी है तबसे!
कितने ही मधु पतझर बीत गये अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूली, शरदें मुसकाई,
सी–सी कर हेमन्त कँपे, तरु झरे, खिले वन!
औ जब फिर से गाढ़ी, ऊदी लालसा लिये
गहरे, कजरारे बादल बरसे धरती पर,
मैंने कौतूहल–वश आँगन के कोने की
गीली तह यों ही उँगली से सहलाकर
बीज सेम के दबा दिये मिट्टी के नीचे–
भू के अंचल में मणि–माणिक बाँध दिये हों!
मैं फिर भूल गया इस छोटी–सी घटना को,
और बात भी क्या थी याद जिसे रखता मन!
किन्तु, एक दिन जब मैं सन्ध्या को आँगन में
टहल रहा था– तब सहसा, मैने देखा
उससे हर्ष–विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से!

देखा–आँगन के कोने में कई नवागत
छोटे–छोटे छाता ताने खड़े हुए हैं!
छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं प्यारी–
जो भी हो, वे हरे–हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे–
डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों से!
निर्निमेष, क्षण भर, मैं उनको रहा देखता–
सहसा मुझे स्मरण हो आया– कुछ दिन पहिले
बीज सेम के मैने रोपे थे आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधो की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हें नाटे पैर पटक, बढती जाती है!

तब से उनको रहा देखता धीरे–धीरे
अनगिनती पत्तों से लद, भर गयी झाड़ियाँ,
हरे–भरे टँग गये कई मखमली चँदोवे!
बेलें फैल गयी बल खा, आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे–हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को,–
मैं अवाक् रह गया– वंश कैसे बढ़ता है!
छोटे तारों–से छितरे, फूलों के छीटे
झागों–से लिपटे लहरे श्यामल लतरों पर
सुन्दर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ–से,
चोटी के मोती–से, आँचल के बूटों–से!

ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ फूटी!
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ,–
पतली चौड़ी फलियाँ! उफ उनकी क्या गिनती!
लम्बी–लम्बी अँगुलियों–सी नन्हीं–नन्हीं
तलवारों–सी पन्ने के प्यारे हारों–सी,
झूठ न समझें चन्द्र कलाओं–सी नित बढ़ती,
सच्चे मोती की लड़ियों–सी, ढेर–ढेर खिल
झुण्ड–झुण्ड झिलमिलकर कचपचिया तारों–सी!
आः इतनी फलियाँ टूटी, जाड़ो भर खाईं,
सुबह शाम वे घर–घर पकीं, पड़ोस पास के
जाने–अनजाने सब लोगों में बँटवाईं
बंधु–बांधवों, मित्रों, अभ्यागत, मँगतों ने
जी भर–भर दिन–रात मुहल्ले भर ने खाई !–
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ!

यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नही समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को,–
बचपन में छिः स्वार्थ लोभवश पैसे बो कर!
रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव–ममता के दाने बोने हैं–
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की, जीवन श्रम से हँसे दिशाएँ–
हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।

(प्रसिद्ध छायावादी कवि)

छल का फल

(मणिपुरी लोककथा)

पुराने जमाने की बात है। किसी एक गाँव में दो दोस्त रहते थे। दोनों पक्के दोस्त थे। उनमें से किसी एक की शादी माता–पिता की मर्जी से एक अमीर घर की लड़की के साथ हुई। कन्या अमीर तो थी, मगर जरा कुरूप थी। दूसरे दोस्त ने गंधर्व विवाह किया था जो सुन्दर होने के साथ–साथ बुद्धिमती भी थी।

पहले दोस्त के पास धन की तो कमी नहीं थी, मगर कुरूप पत्नी को पाकर वह सुखी नहीं था। दूसरा दोस्त गरीब तो था मगर अपनी सुन्दर पत्नी के साथ हँसी–खुशी जिन्दगी जी रहा था। यह देखकर धनी दोस्त के मन में ईर्ष्या पैदा हुई। उसके मन में यह विचार उठने लगा कि किस प्रकार दोस्त की सुन्दर पत्नी को अपना बना लें। इसी बात को लेकर वह दिन–रात बेचैन रहता था।

एक दिन, अचानक रास्ते में दोनों दोस्त मिले। धनी दोस्त ने कहा, 'दोस्त हम कितने दिन से नहीं मिले हैं। पहले तो हम दोनों एक साथ भोजन किया करते थे, मगर अब तो कितने दिन हो गये। अब तो हम अपने–अपने काम में व्यस्त हैं, इसलिए साथ में भोजन करने की बात तो दूर, मिलकर हाल–चाल पूछने को समय ही नहीं मिलता। तो क्यों न एकदिन हमारे यहाँ साथ में भोजन किया जाये।'

दोस्त की बात सुनकर गरीब दोस्त ने कहा, 'दोस्त, यह तो बहुत खुशी की बात है। तो कल ही तुम हमारे घर खाने पर आओ।' फिर धनी दोस्त ने कहा, 'नहीं दोस्त, पहले तुम मेरे घर खाने पर आओगे। फिर मैं तुम्हारे घर आऊँगा। कल तुमको हमारे घर आना होगा। मगर दोस्त, मैं एक शर्त रखूँगा, वह तुमको माननी पड़ेगी।' यह बात सुनकर गरीब दोस्त ने घबड़ाते हुए कहा, 'क्या शर्त है?' दूसरे दोस्त की घबड़ाहट देखकर पहले दोस्त ने कहा, 'दोस्त ऐसी कोई खास बात नहीं है। मैं यह शर्त रखने वाला था कि भोजन करने के बाद जो भी चीज तुम्हारे हाथ लगेगी वह तुम्हारी हो जाएगी चाहे वह कितनी भी मूल्यवान क्यों न हो, तुम्हें लेनी होगी। परसों जब मैं तुम्हारे घर आऊँगा तब मैं भी तुम्हारे वहाँ से कुछ न कुछ लेकर आऊँगा। वह चीज हम अपने पास हमेशा के लिए प्यार की निशानी बनाकर अपने–अपने पास रखेंगे।'

अमीर दोस्त की बात सुनकर गरीब दोस्त सोच में पड़ गया कि हमारे दोस्त तो बहुत धनी व्यक्ति हैं। उनके घर से तो मुझे कोई–न–कोई मूल्यवान चीज मिल जायेगी, मगर मेरे पास तो कोई मूल्यवान चीज ही नहीं जो हमारे दोस्त के लायक हो। गरीब दोस्त कुछ अनुमान नहीं कर पाया कि अमीर दोस्त उसके घर से क्या चाहता है? फिर भी उसने दोस्त की बात को नहीं टाला।

गरीब दोस्त ने घर आकर सारी बात पत्नी को बतायी। पति की बात सुनकर पत्नी खुश हुई। मगर शर्त वाली बात उसकी भी समझ में नहीं आयी। वह बुद्धिमती थी, तो इतना तो समझ गई कि जरूर कुछ न कुछ तो है, फिर भी पति को वहाँ जाने से नहीं रोका। वह कहने लगी, 'ठीक है, वह तो धनी व्यक्ति है। उनके घर में तो बहुत मूल्यवान चीजें होंगी। आपको जो सबसे मूल्यवान लगे वह छू कर लेते आना।'

अगले दिन गरीब दोस्त अमीर दोस्त के घर पहुँचा। अमीर दोस्त ने खुशी–खुशी स्वागत किया। थोड़ी देर बाद खाना आ गया। कई तरह की मछलियाँ पकायी थीं। दोनों दोस्तों ने पेट भर खाया। खाना समाप्त होते ही अमीर दोस्त ने कहा, 'दोस्त हमारी शर्त के अनुसार जो तुम छुओगे वह चीज ले सकते हो।' यह बात सुनते ही गरीब दोस्त की नजर इधर–उधर घूमने लगी।... (शेष पृष्ठ 12 पर)

विशेष निरीक्षण टीम द्वारा विभिन्न परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर एवं संबद्ध महाविद्यालयों के चार जनपदों में संचालित सम सेमेस्टर स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षाओं के अंतर्गत आज विश्वविद्यालय की विशेष निरीक्षण टीम द्वारा महाराजगंज जनपद के विभिन्न परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण किया गया।

परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव के नेतृत्व में गठित टीम में डॉ. रविकांत शुक्ला एवं डॉ. देवबख्श सिंह सम्मिलित रहे। टीम ने महाराजगंज स्थित विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा व्यवस्था, पारदर्शिता एवं नकलविहीन परीक्षा संचालन का गहन निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान निरीक्षण टीम द्वारा परीक्षा केंद्र राजेंद्र प्रसाद ताराचंद महाविद्यालय निचलौल महाराजगंज, जहाँ मनु लॉ कॉलेज महाराजगंज के विद्यार्थी परीक्षा दे रहे थे, द्वितीय पाली की परीक्षा में उसके 05 विद्यार्थियों को नकल करते हुए पकड़ा गया। संबंधित विद्यार्थियों को अनुचित साधन प्रयोग (यूएफएम) के अंतर्गत वांछित किया गया।

इसी प्रकार परीक्षा केंद्र डॉ भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय महाराजगंज, जहाँ रामरेखा राय विधि महाविद्यालय महाराजगंज के विद्यार्थी परीक्षा दे रहे थे, वहाँ भी 18 विद्यार्थियों को नकल करते हुए पकड़ा गया। सभी संबंधित परीक्षार्थियों के विरुद्ध अनुचित साधन प्रयोग की कार्यवाही की गई।

परीक्षा नियंत्रक ने केंद्र–व्यवस्थापकों एवं कक्ष निरीक्षकों को निर्देशित किया कि परीक्षा की शुचिता एवं पारदर्शिता बनाए रखने में किसी प्रकार की शिथिलता न बरती जाए। उन्होंने कहा कि परीक्षा प्रारंभ होने से पूर्व मुख्य द्वार पर ही सघन जाँच सुनिश्चित की जाए तथा मोबाइल, ब्लूटूथ, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट एवं अन्य प्रतिबंधित सामग्री को पूर्णतः वर्जित किया जाए। हर हाल में नकलविहीन परीक्षा संपन्न कराना विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

उन्होंने यह भी बताया कि परीक्षा को पूरी सुचिता तथा पारदर्शिता के साथ सम्पन्न कराने हेतु विश्वविद्यालय स्तर से सीसीटीवी मॉनिटरिंग के माध्यम से सभी परीक्षा केंद्रों की सतत निगरानी एवं नियंत्रण किया जा रहा है।

कुलसचिव एवं परीक्षा–नियंत्रक द्वारा मूल्यांकन केंद्र का निरीक्षण

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के सम सेमेस्टर पाठ्यक्रम की परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कार्य सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिसर, कला संकाय में संचालित किया जा रहा है। आज मूल्यांकन केंद्र का निरीक्षण विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार एवं परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव द्वारा किया गया।

निरीक्षण के दौरान कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि मूल्यांकन प्रक्रिया विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरी गंभीरता, निष्पक्षता एवं पारदर्शिता के साथ किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों के परिश्रम का सही आकलन हो सके। उन्होंने कहा कि मूल्यांकनकर्ता अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी एवं सतर्कता के साथ करें।

परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने अपने संबोधन में कहा कि मूल्यांकन की गुणवत्ता ही विद्यार्थियों के भविष्य की दिशा निर्धारित करती है। इसलिए प्रत्येक परीक्षक को उत्तर पुस्तिकाओं का सूक्ष्म अध्ययन करते हुए निर्धारित मानकों के अनुरूप अंक प्रदान करने चाहिए। उन्होंने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय पारदर्शी एवं गुणवत्तापूर्ण परीक्षा प्रणाली के लिए प्रतिबद्ध है।

निरीक्षण के दौरान दोनों अधिकारियों ने मूल्यांकन केंद्र पर परीक्षकों हेतु उपलब्ध कराई गई सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया तथा आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। इस अवसर पर मूल्यांकन समन्वयक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह हृदयकान्त पांडेय एवं डॉ. मुन्नू खान सहित अन्य शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में सम सेमेस्टर परीक्षाओं के परिणाम घोषित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्यों के अनुरूप समयबद्ध परीक्षा, मूल्यांकन एवं परीक्षा परिणाम घोषित करने की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है। विश्वविद्यालय में आयोजित सम सेमेस्टर परीक्षाओं के उपरांत विभिन्न पाठ्यक्रमों की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कार्य निर्धारित मानकों के अनुसार तीव्र गति से संपन्न कराया जा रहा है तथा क्रमशः परीक्षा परिणाम घोषित किए जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने परीक्षा नियंत्रक एवं संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया था कि सेमेस्टर प्रणाली की सफलता समय से पाठ्यक्रम संचालन, परीक्षा आयोजन, मूल्यांकन एवं परीक्षा परिणाम घोषित करने पर निर्भर करती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को समय पर परीक्षा परिणाम उपलब्ध हो, जिससे वे उच्च शिक्षा, शोध एवं अन्य प्रवेश प्रक्रियाओं में बिना किसी कठिनाई के सम्मिलित हो सकें।

इसी क्रम में विश्वविद्यालय द्वारा पूर्व में लोक प्रशासन स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर तथा बीएससी कृषि अष्टम सेमेस्टर के परीक्षा परिणाम घोषित किए गए थे। आज विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा अर्थशास्त्र स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर एवं बायोटेक्नोलॉजी स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर के परीक्षा परिणाम भी घोषित कर दिए गए।

परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षा संचालन की ऐसी कार्यप्रणाली विकसित की गई है जिसमें एक ओर परीक्षाएं संचालित होती हैं, वहीं दूसरी ओर जिन पाठ्यक्रमों की परीक्षाएं संपन्न हो जाती हैं उनका मूल्यांकन एवं प्रयोगात्मक परीक्षाएं समानांतर रूप से प्रारंभ कर दी जाती हैं। इससे परीक्षा परिणाम समय से घोषित करने में सुविधा होती है।

उन्होंने बताया कि समयबद्ध परीक्षा परिणाम घोषित होने से विद्यार्थियों को दोहरा लाभ प्राप्त होता है। एक ओर जिन विद्यार्थियों को अन्य विश्वविद्यालयों, संस्थानों अथवा पीएचडी एवं अन्य उच्च पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेना होता है, उन्हें समय पर अंकपत्र एवं परिणाम उपलब्ध हो जाते हैं, वहीं विश्वविद्यालय परिसर एवं संबद्ध

महाविद्यालयों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को भी प्रवेश–प्रक्रिया में सहूलियत प्राप्त होती है।

दीनानाथ यादव ने कहा कि विश्वविद्यालय में अन्य विषयों के परीक्षा परिणाम भी शीघ्र घोषित किए जाएंगे तथा मूल्यांकन कार्य निर्धारित मानकों एवं गुणवत्ता के अनुरूप निरंतर संचालित किया जा रहा है।

एम. बी. ए. के छात्र दीपक कुमार वर्मा का 7 लाख वार्षिक पैकेज पर चयन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के प्रबंध अध्ययन विभाग के लिए अत्यंत गर्व एवं हर्ष का विषय है कि एम.बी.ए. पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष के छात्र दीपक कुमार वर्मा का चयन प्रतिष्ठित कंपनी XPower Solution LLP में वार्षिक 7 लाख रुपये के आकर्षक पैकेज पर हुआ है। छात्र की इस उल्लेखनीय उपलब्धि से विश्वविद्यालय परिवार में हर्ष का वातावरण व्याप्त है।

दीपक कुमार वर्मा ने अपनी मेहनत, लगन एवं उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन के बल पर यह सफलता प्राप्त की है। उनका चयन विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बन गया है तथा यह सिद्ध करता है कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के छात्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।

इस अवसर पर प्रबंध अध्ययन विभागाध्यक्ष एवं वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रो० सौरभ ने छात्र को बधाई देते हुए कहा कि विभाग निरंतर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि दीपक की सफलता विभाग के गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं प्रशिक्षण का परिणाम है और इससे अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलेगी।

वहीं सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो० कविता शाह ने दीपक कुमार वर्मा को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा, प्रशिक्षण एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में विश्वविद्यालय के और अधिक छात्र–छात्राएं विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियों में चयनित होकर विश्वविद्यालय का नाम गौरवान्वित करेंगे।

विश्वविद्यालय प्रशासन, शिक्षकगण एवं छात्र–छात्राओं ने दीपक कुमार वर्मा की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल एवं सफल भविष्य की कामना की है।

(बुद्ध–प्रसंग)

वेदब्भजातक

इसे शास्ता ने जेतवन में विहार करते समय बात न मानने वाले भिक्षु के प्रति कहा। उस भिक्षु को शास्ता ने 'भिक्षु ! तू इस समय ही बात मानने वाला नहीं है, पहले भी बात न मानने वाला ही था। उसी बात को न मानने के कारण पण्डितों की बात न मान करके तेज तलवार से दो टुकड़े हो करके मार्ग में पड़ा रहा। तेरे एक के कारण हजार आदमी मृत्यु को प्राप्त हुए' कहकर अतीत कथा कही–

प्राचीन काल में वाराणसी में ब्रह्मदत्त के राज्य करते समय एक छोटे गाँव में कोई एक ब्राह्मण 'बेदब्भ' नामक मन्त्र जानता था। वह मंत्र अनर्घ और बहुमूल्य था। नक्षत्र योग प्राप्त होने पर उस मन्त्र को जप करके आकाश को देखने पर आकाश से सात रत्नों की वर्षा होती थी। उस समय बोधिसत्त्व उस ब्राह्मण के पाम विद्याध्ययन करते थे। तब एक दिन ब्राह्मण बोधिसत्त्व को लेकर किसी काम से अपने गाँव से निकल कर चेदि राष्ट्र को गया। बीच मार्ग में एक जंगल में पाँच सौ 'पेसनक' (प्रेषणक) नामक चोर राहजनी करते थे। उन्होंने बोधिसत्त्व और वेदब्भ ब्राह्मण को पकड़ लिया। क्यों 'पेसनक' चोर कहे जाते हैं ?

वे दो आदमियों को पकडकर एक को धन लाने के लिए भेजते हैं, इसलिए 'पेसनक चोर ही कहे जाते हैं।' वे पिता पुत्र को पकड़कर पिता को 'तुम हम लोगों के लिए धन लाकर पुत्र को ले जाओ' कहते हैं। इसी प्रकार माता–पुत्री को पकडकर माता को छोडते हैं। जेठे–छोटे भाई को पकड़कर जेठे भाई को छोड़ते हैं। गुरु–शिष्य को पकड़ कर शिष्य को छोडते हैं। उन्होंने उस समय भी वेदब्भ ब्राह्मण को पकडकर बोधिसत्व को छोड़ दिया। बोधिसत्त्व आचार्य को प्रणाम कर 'मैं दो एक दिन बीतने पर आऊँगा। आप मत डरिये। किन्तु मेरी बात मानियेगा। आज धन वर्षा कराने का नक्षत्र होगा। आप दु:ख न सहते हुये मंत्र जप कर धन मत बरसाइयेगा. यदि बरसायेंगे, तो आप विनाश को प्राप्त हो जायेंगे।' इस प्रकार आचार्य को समझाकर धन के लिए चले गये ।

चोरों ने भी सूर्यास्त होने पर ब्राह्मण को बाँधकर सुला दिया। उसी क्षण पूर्व दिशा से परिपूर्ण चन्द्र मण्डल निकला। ब्राह्मण ने नक्षत्र को देखकर धन बरसाने वाला नक्षत्र योग प्राप्त हुआ है, मुझे दु:ख उठाने से क्या लाभ, मन्त्र को जप कर रत्नों की वर्षा कर चोरों को धन दे, सुखपूर्वक जाऊँगा' ऐसा विचार कर चोरों को सम्बोधित किया–

'हे चोरों ! तुम लोग मुझे किस लिए पकड़े हो!'

'आर्य धन के लिए!'

'यदि तुम लोगों को धन से प्रयोजन है तो शीघ्र मुझे बन्धन से छुड़ाकर सिर से नहलाकर नये वस्त्रों को पहनाकर सुगन्धियों से विलम्पित कर पुष्प पहनाओ।'

चोरों ने उसकी बात सुन वैसा ही किया। ब्राह्मण ने नक्षत्र योग जानकर मन्त्र को जपकर आकाश की ओर देखा। उसी समय आकाश से रत्न गिरने लगे। चोर उस समग्र धन को एकत्र कर चादरों में गठरी बाँधकर चल दिये। ब्राह्मण भी उनके पीछे–पीछे हो गया।

तब उन चोरों को दूसरे पाँच सौ चोरों ने पकड़ा।

'हमें किस लिये पकड़ रहे हो!' कहने पर 'धन के लिये' कहा। 'यदि तुम लोगों को धन से मतलब है, तो इस ब्राह्मण को पकड़ो, इसने आकाश में देख कर धन बरसाया। हम लोगों को यह इसने ही दिया है।'

चोरों ने चोरों को छोड़ 'हम लोगों की भी धन दो' (कहकर) ब्राह्मण को पकड़ लिया।

ब्राह्मण ने 'मैं तुम लोगों को धन देता, किन्तु धन बरसाने वाला नक्षत्र योग आज से एक वर्ष बाद होगा। यदि तुम लोगों को धन से प्रयोजन है, तो संतोष करो, उस समय धन की वर्षा करूँगा' कहा!

चोरों ने क्रुद्ध हो 'रे ब्राह्मण! दूसरों के जिए अभी धन बरसा कर हम लोगों के लिए संतोष देते हो।' (कहकर) तेज तलवार से ब्राह्मण को दो टुकड़ों में काट मार्ग में छोड़, तेजी से पीछा करके उन चोरों के साथ लड़कर उन सबको मारकर धन ले, फिर दो हिस्सों में होकर परस्पर लड़ाई करके ढाई सौ पुरुषों को मारकर इसी प्रकार जब तक दो आदमी शेष रहे, तब तक परस्पर मार–काट की। इस प्रकार वे एक हजार आदमी विनाश को प्राप्त हो गये।

वे दोनों आदमी उपाय से उस धन को लाकर एक गाँव के पास झाड़ीदार स्थान पर धन को ढँककर एक चोर तलवार लेकर रखवाली करते हुए बैठा। एक चावल लेकर भात पकाने के लिए गाँव में गया। 'यह लोभ विनाश की जड़ है।' धन के पास बैठे हुए व्यक्ति ने विचार किया– 'उसके आने पर इन धन के दो भाग हो जायेंगे, क्यों न मैं उसे आते ही तलवार से प्रहार कर मार डालू?' वह तलवार तैयार कर उसके आने की बाट देखता हुआ बैठा रहा।

दूसरे ने भी विचार किया 'उस धन के दो भाग हो जायेंगे। क्यों न भात में विष डालकर उस पुरुष को खिला कर जान से मार अकेले ही धन को ले लू?' वह भात तैयार हो जाने पर स्वयं खाकर शेष में विष डालकर उसे लेकर वहाँ गया । भात को उतारकर रखते ही दूसरे ने उसे तलवार से दो टुकड़ों में काट कर ढँके हुये स्थान में फेंक कर और उस भात को खा स्वयं भी वहीं मर गया। इस प्रकार उस धन के कारण सभी विनाश को प्राप्त हो गये ।

बोधिसत्त्व भी एक दो दिन बीतने पर धन लेकर आये। उस स्थान पर आचार्य को न देख बिखरे हुये धन को देख 'आचार्य ने मेरी बात न मानकर धन बरसाया होगा सब विनाश को प्राप्त हो गये होंगे' (सोच) महामार्ग से चल दिये। जाते हुये आचार्य को मार्ग में दो टुकड़ों में कटा हुआ देख 'मेरी बात न मानकर मर गये!' (कह) लकड़ियों को जमा कर चिता बना, आचार्य को जला वन–पुष्पों से पूजा कर आगे जाते हुये मरे हुये पाँच सौ को, आगे ढाई सौ को,

क्रमशः अन्त में दो आदमियों को कम हुआ देख ये विचार किया– 'ये दो कम एक हजार आदमी विनाश को प्राप्त हो गये। अन्य दो चोरों को भी होना चाहिये। वे भी सहन न कर सकेंगे। वे कहाँ गये हैं?' (इस प्रकार सोच) जाते हुये उन्होंने धन लेकर झाड़ीदार स्थान में प्रवेश करने के मार्ग को देख, जाते हुये गठरी बाँधे हुए धनराशि को देख, एक को भात की थाली सामने रखकर मरा हुआ देखा, तब 'उनके द्वारा यह किया गया होगा।' सब जानकर 'वह आदमी कहाँ हैं?' ढूँढ़ते हुये उसे भी ढँके हुये स्थान पर फेंका हुआ देख, 'हमारे आचार्य मेरी बात न मानकर अपनी अनाज्ञाकारिता से स्वयं भी विनाश को प्राप्त हो गये, उनके द्वारा दूसरे भी एक हजार आदमी नंष्ट किये गये। बुरे उपाय और अकारण से अपनी उन्नति चाहने वाले हमारे आचार्य के समान व्यक्ति महाविनाश को ही प्राप्त होंगे।' विचार कर इस गाथा को कहा–

अनुपायेन योऽर्थमिच्छति स विहन्ते।
चेदा (चैद्या) अवधिषुवैदर्भ सर्वे व्यसन मध्ययुगा।।

'जो व्यक्ति बुरे उपाय से अपना हित चाहता है वह विनष्ट हो जाता है। चेदि राष्ट्र के चोरों ने वेदब्भ ब्राह्मण को मार डाला और सब विनाश को प्राप्त हो गए।'

इस प्रकार बोधिसत्त्व 'जैसे हमारे आचार्य बुरे उपाय से अनुचित स्थान पर उद्योग करते हुए धन बरसा कर अपनी मृत्यु को प्राप्त हुए और दूसरो के विनाश का भी कारण बने, ऐसे ही कोई) दूसरा भी बुरे उपाय से अपना हित चाहकर उद्योग करेगा वह सम्पूर्णतः स्वयं विनष्ट होगा और दूसरों के विनाश का भी कारण होगा।' (इस प्रकार कह) वन को उद्घोषित करके देवताओं को साधुकार देते हुए इस गाथा से धर्मोपदेश दे, उस धन को उपाय से अपने घर में लाकर दान आदि पुण्यों को करते हुए आयुपर्यन्त रहकर जीवन के अन्त में स्वर्ग मार्ग को पूर्ण करते हुए चले गए।(११३)

शास्ता ने भी 'भिक्षु ! तू इस समय ही अवज्ञाकारी नहीं है, पहले भी अवज्ञाकारी था' (कह) इस धर्मोपदेश को ला जातक को समाप्त किया। उस समय वेदब्भ ब्राह्मण आज्ञाकारी भिक्षु था, शिष्य तो मैं ही था।

पृष्ठ 9 का शेष भाग...

...ठीक उसके सामने सोने से बना एक सजावट का सामान रखा था। उसकी नजर उस पर पड़ी। अमीर दोस्त ने जान–बूझकर वह चीज वहाँ रखी थी, ताकि गरीब दोस्त की नजर उस पर पड़े। गरीब दोस्त ने उठकर उस सोने की सजावट को छुआ। तब अमीर दोस्त ने अनजान बनकर कहा, 'दोस्त, तुम्हारे हाथ तो बहुत मूल्यवान चीज लगी है। मुझे तो याद ही नहीं था कि यह सजावट का सामान यहाँ रखा है। फिर भी हमारी शर्त के अनुसार अब यह तुम्हारा है। अमीर दोस्त की बात सुनकर गरीब दोस्त बहुत खुश हुआ। थोड़ी देर बातें करके वहाँ से जाने के लिए निकला तब गरीब दोस्त ने अमीर दोस्त से कहा, 'दोस्त, आज तुमने मेरे लिए जितना अच्छा इंतजाम किया है उतना मैं तो नहीं कर पाऊँगा। फिर भी तुम हमारे घर में आना। जितना मुझसे हो सकेगा उतना मैं तुम्हारे लिए इंतजाम करूँगा। फिर अमीर दोस्त ने मजाक के मूड में कहा, वह तो ठीक है, मगर शर्त वाली बात याद रखना, भूलना मत।

ऐसे हँसी–खुशी दोनों ने एक–दूसरे को विदा किया। गरीब दोस्त ने घर पहुँचकर वह मूल्यवान सामान पत्नी को दिया। दोनों बहुत खुश हुए। उस रात को उसकी पत्नी यह सोचती रही कि उनके अमीर दोस्त ने ऐसी शर्त क्यों रखी? हमारे घर तो उनके लायक ऐसी कोई चीज भी नहीं।

अगले दिन गरीब दोस्त ने जितना उससे हो सका, उतना अच्छा इंतजाम किया। अमीर दोस्त के आने से पहले उसकी पत्नी ने उसको अपने पास बैठाया और कहा, 'पता नहीं, आपका दोस्त हमारे यहाँ से क्या चाहता है? हमारे पास तो उनके लायक ऐसी कोई चीज भी नहीं। मुझे तो कुछ चाल लग रही है। इसलिए आप लोगों की सेवा खत्म होते ही मैं ऊपर चली जाऊँगी। आप मुझे मत बुलाना। तब शायद वह मेरे बारे में जरूर पूछेगा, तो कहना ऊपर होगी। वह ऊपर आने के लिये लकड़ी की सीढ़ी का डण्डा हाथ से छुएगा तब आप झट से कहना, 'दोस्त इस सीढ़ी को तुमने छुआ है, अब यह तुम्हारी हो गयी।'

पत्नी की बात पति की समझ में नहीं आयी, फिर भी जैसे पत्नी ने कहा, ठीक वैसे ही पति ने किया।

अमीर दोस्त खाने के लिए आया। गरीब दोस्त की सुन्दर पत्नी ने बहुत अच्छी तरह सेवा की। दोनों दोस्त खाना खाने लग गये। खाना समाप्त होने से पहले सुन्दर पत्नी ऊपर चली गयी। खाना समाप्त होते ही उसकी नजर दोस्त की सुन्दर पत्नी को ढूँढ़ने लगी। जब दिखाई नहीं दी तो पूछने लगा, 'दोस्त, भाभी कहीं नजर नहीं आ रही, कहाँ गयी?' 'बीबी की बात सच निकली', यह सोचकर गरीब दोस्त ने कहा, 'ऊपर होगी।' यह सुनते ही अमीर दोस्त ने हाथ धोकर सीढ़ी का डण्डा पकड़ा। तब जल्द ही गरीब दोस्त ने कहा, 'दोस्त, हमारी शर्त के अनुसार भोजन करने के बाद सबसे पहले तुमने इस सीढ़ी को छुआ है। अब यह तुम्हारी हो गयी। अब तुम इसे घर ले जा सकते हो। हमारे घर एक भी कीमती चीज तो नहीं, फिर भी दोस्त तुमने हमारी गरीबी को देखकर इस सीढ़ी को छुआ। तुमको मानना पड़ेगा।'

गरीब दोस्त की बात सुनकर उसको अपनी असफलता पर गुस्सा भी आया और साथ में लज्जित भी हुआ। उसके मन में खोट था, इसलिए वह कुछ नहीं कह पाया। चुपचाप दोस्त के घर से बाहर निकल गया। बाद में गरीब दोस्त की समझ में आया कि उसके दोस्त ने ऐसी शर्त क्यों रखी थी? गरीब दोस्त और उसकी पत्नी एक दूसरे को अच्छी तरह जानकर जिन्दगी भर खुश रहे।

प्रस्तोता– निंग यौजम मिनरभा देवी

(समन्वय पूर्वोत्तर, अंक 7, अप्रैल–जून 2010 से साभार)

बढ़ रहीं त्यों–त्यों दिलों की दूरियाँ दिन–दिन,
आदमी होता सघन ज्यों जा रहा है अब।
आदमी ही आदमी से अजनबी है अब,
जानता ब्रह्माण्ड जबकि जा रहा है सब।
खोलता परतें प्रकृति की जा रहा ज्यों–ज्यों,
भूलता अस्तित्व अपना जा रहा है तब।
घट रहीं ज्यों–ज्यों परस्पर दूरियाँ जग की,
घर ही घर से दूर होता जा रहा है अब।
बढ़ रहे विज्ञान के ज्यों–ज्यों चरण आगे,
आदमी पीछे घिसटता जा रहा है अब।
स्वयं के सम्मुख हुआ वह स्वयं ही बौना,
हरीश इसका ही तो रोना आ रहा है अब।

देश मेरे नमन है तुझे, मातृ–भू को है सादर प्रणाम।
प्राप्त आशीष हमको हो ऐसा, जिससे ऊँचा करें तेरा नाम!

परामर्श एवं सम्पादक–मण्डल के सदस्य मा. कुलपति जी के साथ